मीराबाई

जीवन-परिचय

मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी ग्राम में सन् 1498 ई० के आसपास हुआ था। इनके पिता का नाम रतनसिंह था। उदयपुर के राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह हुआ था, किन्तु विवाह के थोड़े ही दिनों बाद इनके पति की मृत्यु हो गयी।

मीरा बचपन से ही भगवान् कृष्ण के प्रति अनुरक्त थीं। सारी लोक-लज्जा की चिन्ता छोड़कर साधुओं के साथ कीर्तन-भजन करती रहती थीं। उनका इस प्रकार का व्यवहार उदयपुर के राज-मरयादा के प्रतिकूल था। अत: उन्हें मारने के लिए जहर का प्याला भी भेजा गया था, किन्तु ईश्वरीय कृपा से उनका बाल-बाँका तक नहीं हुआ। परिवार से विरक्त होकर वे वृन्दावन और वहाँ से द्वारिका चली गयी और 1546 ई० में स्वर्गवासी हुई।

रचनाएँ

मीराबाई ने भगवान् श्रीकृष्ण के प्रेम में अनेक भावपूर्ण गेय पदों की रचना की है जिसके संकलन विभिन्न नामों से प्रकाशित हुए हैं। नरसीजी का मायरा, राम गोविन्द, राग सीरठ के पद, गीत गोविन्द की टीका मीराबाई की रचनाएँ हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

(क) भाव-पक्ष- मीरा कृष्णभक्ति शाखा की सगुणोपासिका भक्त कवयित्री हैं। इनके काव्य का वर्ण्य-विषय एकमात्र नटवर नागर श्रीकृष्ण का मधुर प्रेम है।

(1) विनय तथा प्रार्थना सम्बन्धी पद- जिनमें प्रेम सम्बन्धी आतुरता और आत्मस्वरूप समर्पण की भावना निहित है।

(2) कृष्ण के सौन्दर्य वर्णन सम्बन्धी पद - जिनमें मनमोहन श्रीकृष्ण के मनमोहक स्वरूप की झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

(3) प्रेम सम्बन्धी पद- जिनमें मीरा के श्रीकृष्ण प्रेम सम्बन्धी उत्कट प्रेम का चित्रांकन है। इनमें संयोग और वियोग दोनों पक्षों का मार्मिक वर्णन हुआ है।

(4) रहस्यवादी भावना के पद- जिनमें मीरा के निर्गुण भक्ति का चित्रण हुआ है।

(5) जीवन सम्बन्धी पद- जिनमें उनके जीवन सम्बन्धी घटनाओं का चित्रण हुआ है।

(ख) कला-पक्ष- (1) भाषा-शैली- मीरा के काव्य की भाषा ब्रजी है जिसमें राजस्थानी, गुजराती, भोजपुरी, पंजाबी भाषाओं के शब्द हैं । मीरा की भाषा भावों की अनुगामिनी है । उनमें एकरूपता नहीं है फिर भी स्वाभाविकता, सरसता और मधुरता कूट-कूटकर भरी हुई हैं।

(2) रस-छन्द-अलंकार- मीरा की रचनाओं में श्रृंगार रस के दोनों पक्ष, संयोग और वियोग का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। इसके अतिरिक्त शान्त रस का भी बड़ा ही सुन्दर समावेश हुआ है। मीरा का सम्पूर्ण काव्य गेय पदों में है जो विभिन्न राग-रागनियों में बँधे हुए हैं। अलंकारों का प्रयोग मीरा की रचनाओं मेंस्वाभाविक ढंग से हुआ है। विशेषकर वे उपमा, रूपक, दृष्टान्त आदि अलंकारों के प्रयोग से बड़े ही स्वाभाविक हुए हैं।

साहित्य में स्थान

हिन्दी गीति काव्य की परम्परा में मीरा का अपना अप्रतिम स्थान है। प्रेम की पीड़ा का जैसा मर्मस्पर्शी वर्णन मीरा की रचनाओं में उपलब्ध होता है वैसा हिन्दी साहित्य में अन्यत्र सुलभ नहीं है।

स्मरणीय तथ्य

जन्म- 1498 ई०।

पति- महाराणा भोजराज।

मृत्यु- 1546 ई० के आसपास।

पिता- रतन सिंह।

रचना- गेय पद।

काव्यगत विशेषताएँ

वर्ण्य-विषय- विनय, भक्ति, रूप-वर्णन, रहस्यवाद, संयोग वर्णन।

रस- श्रृंगार (संयोग-वियोग), शान्त।

भाषा- ब्रजभाषा, जिसमें राजस्थानी, गुजराती, पूर्वी पंजाबी और फारसी के शब्द मिले हैं।

शैली- गीतकाव्य की भावपूर्ण शैली ।

छन्द- राग-रांगनियों से पूर्ण गेय यद।

अलंकार- उपमा, रूपक, दृष्टान्त आदि।

कवि-लेखक (poet-Writer)

महत्वपूर्ण लिंक

- सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' (Sachchidananda Vatsyayan)
- रामधारी सिंह 'दिनकर' (Ramdhari Singh Dinkar)
- सुमित्रानन्दन पन्त (Sumitranandan Pant)
- केदारनाथ अग्रवाल (Kedarnath Agarwal)
- हरिवंशराय बच्चन (Harivansh Rai Bachchan)
- सोहनलाल द्विवेदी (Sohan Lal Dwivedi)
- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (Suryakant Tripathi)
- मैथिलीशरण गुप्त (Maithili Sharan Gupt)
- नागार्जुन (Nagarjun)
- मीराबाई (Mirabai)
- डॉ० धर्मवीर भारती (Dharamvir Bharati)
- काका कालेलकर (Kaka Kalelkar)
- श्रीराम शर्मा (Shriram Sharma)
- रहीम (Abdul Rahim Khan-I-Khana)
- मुंशी प्रेमचन्द (Premchand)
- महादेवी वर्मा (Mahadevi Verma)
- पं० प्रतापनारायण मिश्र (Pratap Narayan Mishra)
- महाकवि भूषण (Kavi Bhushan)
- अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (Ayodhya Prasad Upadhyay)
- जगन्नाथदास 'रत्नाकर' (Jagannath Das Ratnakar)
- कविवर बिहारी
- मोहन राकेश (Mohan Rakesh)
- हरिशंकर परसाई (Harishankar Parsai)
- प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी (Surender Reddy)
- तुलसीदास (Tulsidas)
- कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (Kanhiyalal Prabhakar Mishra)
- डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल
- रामवृक्ष बेनीपुरी (Rambriksh Benipuri)
- राहुल सांकृत्यायन (Rahul Sankrityayan)
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (Hazari Prasad Dwivedi)
- सरदार पूर्ण सिंह

- आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी (Mahavir Prasad Dwivedi)
- डॉ० सम्पूर्णानन्द
- जयशंकरप्रसाद की जीवनी
- सूरदास की जीवनी
- कबीरदास की जीवनी
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

sarkariguider.com

sarkariguider.com